www.maharashtrac
Email : editor@maharashtracrimes.in
www.maharashtracrimes.blogspot.in
maharashtracrimes@gmail.com

RNI NO. : MAHHIN/1998/02261

महाराष्ट्र क्राईम्स

वर्ष २० | अंक ०८ | मुंबई, ०५ जून २०२१ | पृष्ठ : ८ | कीमत : ५ रुपये | प्रधान संपादक : सिराज चौधरी

खारघर हिरानंदानी क्रिस्टल प्लाझा सोसायटी के पदाधिकारी अवैध रुप से कर रहे है वसुली

पनवेल महानगरपालिका अतिक्रमण अधिकारी, पुलीस अधिकारी क्रिस्टल सोसायटी सुस्त गैरकानुनन ठेलेवाले मस्त

नवी मुंबई, (दत्ता माने) : मुंबई शहर की बढ़ती आबादी का बोझ कम करने हेतू जब नवी मुंबई का निर्माण किया उस वक्त थाने और रायगड जिले के सेंकडो हेक्टर जमिन सिडको द्वारा संपादित कि गयी। थाने जिले में जो विकसित क्षेत्र था उससे नवी मुंबई महानगर पालिका का निर्माण हुआ। रायगड के पनवेल तालुका में जो विकास हुआ उस विकसीत क्षेत्र और पुराना पनवेल शहर मिलाकर पनवेल महानगरपालिका का निर्माण किया गया। नवी मुंबई में सिडकोने जो क्षेत्र विकसीत किये उसमें खारघर उपनगर पहले नंबर पर है। खारघर का पनवेल महानगर पालिका में समावेश होने के पहले खारघर ग्रुप ग्रामपंचायत रायगड की सबसे अमिर ग्रामपंचायत थी। और प्रशासकीय काम सिडकोद्वारा किया जाता था। सिडको अपने कार्यक्षेत्र में हो रहे अवैध इमारतों के निर्माण, गैरकानुनी तरीकेसे सडक पर धंदा करनेवाले और दुकान के बाहर के परिसर में जगह रोक कर अपना व्यवसाय करने वालों पर अतिक्रमण विभागद्वारा कार्यवाई करती थी।

लेकीन पनवेल महानगरपालिका निर्मित हुई तो खारघर उपनगर भी उसमें शामिल किया गया। जो पहले ग्रामपंचायत सदस्य ये वह पार्षद यांनी नगरसेवक बन गये। इन लोकसेवकों पनवेल महानगरपालिका के भ्रष्ट अधिकारी, कुछ पुलीस अधिकारी और गैरकानुन तरिकेसे व्यवसाय करने वाले छोटे मोठे व्यापारी इनके मेलजोल से खारघर उपनगर में सरकडपर निवासी और वाणिज्यीक रहिवासी इमारतोंके दुकानोंके सामने और इर्दगिर्द खानपान के ठेले सजा दिये गये है।

हमारे संवाददाता को जब यह सूचना मिली तो सच्चाई जानने के लिए खारघर उपनगर को भेंट दि। खारघर सेक्टर ७ में हिरानंदानी परिसर के क्रिस्टल प्लाझा (प्लॉट नं.१८ से २७) इस निवासी एवं वाणिज्यीक संकुल में ७०-७५ दुकानें है। लगबग ६० दुकानोंके सामने की और चाय-कॉफी, स्नॅक्स, और मांसाहारी व्यंजन बेचनेवाले अवैध तरिकेसे अपना जम बिठाये हुए नजर में आते है। यहाँपर वाहन पार्किंग की बाजू की दिवार पर सुबह-शाम अलिशान गाडीयोंसे कई युवक युवतीयाँ समय बिताने हेतू आती है। यहाँपर दोस्तोंके गूट जमा होकर चाय कॉफी की सिसकीया लगाकर ओठों मे सिगरेट जलाकर अपनें प्रेमी के साथ गुटरगुटर करने वालों की वजह से इन अवैध व्यापारीयोंका धंदा जोरोशोरसे चल रहा है। अपने (शेष पृष्ठ ८ पर)

इजरायल में यह विस्फोट तो होना ही था।

ईस्ट यरूशलम की ओल्ड सिटी में घूमते हुए अचानक मेरे कदम ठिठक गए। कानों में किसी की तेज़ चीखें गूंज रही थी। मैं टेंपल माउंट से करीब १०० मीटर की दूरी पर खड़ा था। दिल यहूदियों के पवित्र धर्मस्थल टेंपल माउंट की ओर चलते रहने की ज़िद कर रहा था, मगर दिमाग को वह चीख खींच रही थी। मुझे यहां आने से पहले दो बातें बताई गई थीं। पहली कि यह इलाका अरब मूल के लोगों का गढ़ है और दूसरी कि अरब आज भी इस इलाके से इज़रायल को उखाड़ फेंकने के लिए बेताब हैं।

हालांकि मैं कैमरा और माइक होटल के कमरे में छोड़कर सिर्फ इस शहर को जीने के मकसद से पूर्वी यरूशलम की गलियों में घूम रहा था, लेकिन मेरे भीतर का पत्रकार नहीं माना। मैं उस संकरी गली की ओर मुड़ गया, जहां से चीखने की आवाज़ आ रही थी। यहूदियों के पवित्र मंदिर टेंपल माउंट से लेकर मुसलमानों की पाक अल अक्सा मस्जिद के बीच का यह पूरा इलाका छोटी-छोटी गलियों में बंटा हुआ है। मेरे पहुंचने तक चीख तो शांत हो चली थी, लेकिन उस जगह अब तक एक छोटी भीड़ इकट्ठा हो गई थी। वे अरबी में बातें कर रहे थे।

पास मौजूद एक गाइड से मैंने इस शोर-शराबे की वजह पूछी। "This is the illegal occupation of Israel. He was saying, he will throw Israel out. I am saying, I will throw Israel out. We all are saying, we will throw Israel out.' यह कहते हुए उत्तेजना से उसका चेहरा तन गया। मैं इस समय एक अंगारे के पास खड़ा था। यह अंगारा उसी ज्वालामुखी के लावे से छिटका था, जो पिछले ७० सालों से मिडल ईस्ट की रगों में दौड़ रहा था।

मैं प्रधानमंत्री मोदी की इजरायल यात्रा को कवर करने आया हुआ था। यह आजादी के बाद देश के किसी भी प्रधानमंत्री की पहली इजरायल यात्रा थी, इसलिए वक्त भी बेहद अहम था। मगर मेरी उत्सुकता लगातार मुझे अरब-इजरायल संघर्ष की उस जमीन पर ठहरने को विवश कर रही थी, जिस पर एक पूरी की पूरी सदी का खून हो चुका था। मुझे पूर्वी यरूशलम की गलियों में इतिहास के खून के थक्के जमे दिख रहे थे। वहां की ओल्ड सिटी के भीतर ही मौजूदा अरब-इजरायल संघर्ष की जड़ें हैं। पता नहीं मैं इस जड़ तक पहुंचा या नहीं, पर ओल्ड सिटी की दीवारों पर सदियों से उगी हुई इस संघर्ष की फुनगियों को बहुत करीब से देखा।

सात गेटों से घिरी हुई महज एक वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल की यरूशलम की इस ओल्ड सिटी में बीते दिनों जमकर पत्थर चले। फसाद हुआ। गोलियां गरजीं। फसाद की जड़ यहीं पास स्थित शेख जर्रा इलाके में है। १२वीं शताब्दी के इस्लामिक मिलिट्री लीडर सलादीन के हकीम शेख जर्रा को यहीं दफनाया गया था। उन्हीं के नाम पर इस इलाके का नाम पड़ा। १९६७ की लड़ाई के बाद इस इलाके की तस्वीर बदल गई। इसी साल पूर्वी यरूशलम जॉर्डन के हाथों से निकलकर इजरायल के नियंत्रण में आ गया।

नए नियमों के मुताबिक वे यहूदी जो अपने स्वामित्व के सर्टिफिकेट पेश कर सकते थे, उन्हें अपनी ज़मीनें वापस पाने का अधिकार दिया गया। अरबों ने इसका विरोध किया। झगड़ा यरुशलम की अदालत में पहुंचा। फैसला यहूदियों के पक्ष में हुआ। अरबों ने हिंसक विरोध शुरू किया। फिर विरोध में पत्थरबाज़ी हुई। पत्थरबाजी का यह सिलसिला यहां से शुरू होकर अल अक्सा तक पहुंचा। इजरायल की पुलिस ने एक्शन लिया। भीड़ को इकट्ठा होने और उग्र होने से रोकने के लिए अल अक्सा मस्जिद में रमजान के महीने में नमाज़ियों की संख्या तय की गई। हालांकि यह पहले भी होता रहा है। मगर इस बार अरब खासे नाराज़ थे, सो यह फसाद जैसे ही शुरू हुआ, सारी सीमाएं तोड़ गया। इस फसाद में हमास की एंट्री और इजरायल पर दनादन रॉकेट की बौछार ने इसे 'पॉइंट ऑफ नो रिटर्न' कर दिया, जहां से वापसी की गुंजाइश खत्म हो जाती है।

यरूशलम का शेख जर्रा इलाका ओल्ड सिटी के डमास्कस गेट से करीब आधे किलोमीटर की दूरी पर है। इस डमास्कस गेट से हेरोड गेट और जाफा गेट के बीच अरबों की अच्छी-खासी आबादी है। इजरायल कवरेज के उस वक्त में मेरे लिए यह शाम बिताने की जगह हुआ करती। मैं अक्सर ही ओल्ड सिटी के इन गेटों की ओर घूमने निकल पड़ता। जगह-जगह अरबों के सेटलमेंट्स नज़र आते। भारतीय होने का फायदा यह था कि अरब और यहूदी दोनों ही प्रेम से मिलते थे।

यहां आकर मुझे अरब और यहूदियों के बीच एक अदृश्य सी दूरी दिखाई दी। अदृश्य इसलिए क्योंकि उसे देखने से पहले समझना पड़ता है। अगर समझेंगे तो दिखेगी। नहीं समझेंगे तो आते जाते कदमों की आहट में किसी अनिश्चितता का आभास तब तक नहीं होगा, जब तक कि कोई फसाद या बलवा न हो जाए। शाकाहारी होने के चलते भी अरबों का सेटलमेंट मेरा खास ठिकाना

बन चुका था। यहां का शाकाहारी फलाफेल बहुत मशहूर था। खोमुश खाना हो या फिर स्वीट डिश बकलावा का स्वाद लेना हो, मेरे कदम यहीं आकर टिक जाते। यहीं हेरोड गेट के सामने इंडियन हास्पिश है। इजरायल में हिंदुस्तानियों के आने और ठिठकने का मुख्य ठिकाना। कभी १२वीं शताब्दी में संत बाबा फरीद भारत से यहां पहुंचे थे।

यरूशलम की इस ओल्ड सिटी के डमास्कस से हेरोड गेट की दूरी महज १०० मीटर थी। मगर इन दोनो गेटों के बीच में दिखने वाली दो संस्कृतियों के बीच की दूरी अनंत हो चली थी। विज्ञान ने हाथ खड़े कर दिए थे। इसे मापना उसके बस की बात नहीं रह गई थी। मैं यरूशलम के लियोनार्डो होटल में ठहरा था। इटली में जन्मा लियोनार्दो द विंची १५वीं शताब्दी का इटली का महान चित्रकार, वास्तुकार, कलाशिल्पी व अविष्कारक था। मगर मेरे इस होटल का उस लियोनार्दो से दूर-दूर तक कोई संबंध नही था। वह लियोनार्दो सृजन की रेखाओं का चितेरा था। मगर इस शहर की हथेली पर तो फसाद और विवाद की गहरी रेखाएं अंकित हो चलीं थीं। मैं टेंपल माउंट की उस वेस्टर्न वॉल तक भी गया, जो यहूदियों का पवित्र स्थान है। यहूदियों की मान्यता है कि टेंपल माउंट का निर्माण बाइबिल के समय हुआ। बाद में रोमन साम्राज्य ने ७० -ऊ में पश्चिम हिस्से के छोड़कर बाकी नष्ट कर दिया। यहूदी इस दीवार को पूजते हैं। इस जगह को लेकर दशकों से इजरायल और फिलिस्तीन के बीच तलवारें खिंची हुई हैं।

इसके ठीक बगल में अल अक्सा मस्जिद है। मुस्लिम समुदाय इसे मक्का और मदीना के बाद तीसरा सबसे पाक धर्मस्थल मानता है। उनकी मान्यता के मुताबिक, पैगंबर मोहम्मद साहब मक्का से चलकर इसी अल अक्सा मस्जिद आए थे और यहीं से जन्नत के लिए रवाना हुए। ये सब पवित्र धर्मों के पवित्र स्थल हैं, मगर इनके नाम पर जो हो रहा है, उसमें कितना धर्म है, ये सवाल मुझे तब भी साल रहा था और आज भी वैसे ही परेशान कर रहा है। इजरायल पर हमास के हमले साल १९८७ में उसकी स्थापना के वक्त से ही होते आए हैं। इसी साल पहला इंतिफादा हुआ, जब फिलिस्तीनियों ने इजरायल के खिलाफ वेस्ट बैंक और गाजा पट्टी में उग्र विरोध शुरू किया। एक बड़ा फर्क यह है कि हमास के रॉकेट इस बार यरुशलम की चहारदीवारी तक पहुंच गए हैं। मामला इसलिए और भी गंभीर हो गया है। इससे पहले तक इजरायल में कुछ जगहें थीं, जो इन रॉकेट हमलों का केंद्र हुआ करती थीं। मैं ऐसे ही एक शहर में भी गया। ये शेडरोट था। गाजा से एक मील से भी कम दूरी पर बसा इजरायल का वह शहर, जहां कभी भी खतरे का सायरन बज जाता है। जैसे ही ये सायरन बजता है, लोग शेल्टर हाउस की ओर भागते हैं ताकि रॉकेट उन्हें निशाना न बना सके। ये शेल्टर हाउस इस शहर में खरपतवार की तरह उग आए हैं। यहां तक कि बच्चों के खेलने के पार्क में भी हमें रॉकेट से बचाव वाले ये शेल्टर दिखाई दिए। लगातार युद्ध में घिरे शहर की तस्वीर शायद ऐसी ही होती होगी। इस शहर के पुलिस स्टेशन में मुझे उन रॉकेट के अवशेष भी दिखे, जिन्हें शेडरोट पर लक्ष्य करके दागा गया था। इस बार की लड़ाई में भी इस शहर पर हमले हुए हैं। जान गई है। इस शहर की स्थापना इजरायल की स्थापना के तीन साल बाद साल १९५१ में एक ट्रांजिट कैंप के तौर पर हुई थी, जहां विशेषकर ईरान और कुर्दिस्तान से आए इजरायली अप्रवासी रहते थे।

शेडरोट में घूमते हुए मुझे इजरायल-फिलिस्तीन युद्ध की भयावहता की नंगी तस्वीर दिखाई दी। यहीं पास में कंटीले तारों की ऊंची बाड़ की शक्ल में खड़ी की गई गाजा की दीवार भी दिखी। मुझे यहां दो समानांतर अवरोधक दिखाई दिए। पहला तारों का और दूसरा धातु का, जिस पर निगरानी के सेंसर्स लगे हुए हैं। मजाल है कि कोई परिंदा भी गाजा से इधर पर मार जाए।

इजरायल में मिलिट्री ट्रेनिंग अनिवार्य है। यरूशलम की सड़कों पर अत्याधुनिक गन लेकर चलते इजरायली युवक-युवतियों का समूह लगातार मेरा ध्यान खींचता रहा। १९४८ में इजरायल की स्थापना से लेकर १९६७ के छह दिनों के युद्ध से आज तक इस छोटे से देश पर इतने हमले हुए हैं कि इसका बच्चा-बच्चा देश की खातिर मर-मिटने को बेताब रहता है। चारों तरफ दुश्मनों से घिरे इस छोटे से मुल्क की सबसे बड़ी ताकत यही है। मैं इजरायल की इस ताकत को करीब से समझना चाहता था। सो इजरायल की हथियार फैक्ट्रियों में भी गया। अत्याधुनिक सेंसर्स और राडार सिस्टम बनाने वाली कंपनियों के कामकाज का सिस्टम भी देखा। सायबर वॉर से जूझ रहे इस मुल्क की बेहतरीन सायबर कंपनियों की चहारदीवारी में भी कदम रखे। इजरायल दिन रात हर स्तर पर अपने दुश्मनों से लड़ने के लिए तैयार दिखा। लगातार युद्ध को जीने वाले इस मुल्क के लिए वॉर अब जीवन का हिस्सा है। यह न उसे डराता है, न चौंकाता है। बल्कि निर्णायक पलटवार की उसकी जिजीविषा को और भी धार देता है। पूर्वी यरूशलम की ओल्ड सिटी अब जीवित इतिहास बन चुकी है, जहां जिंदा लड़ाइयों की एक लंबी कतार नज़र आती है। मैं अपनी इस यात्रा में कई बार ऐसी ही कतारों से गुजरा। आज जब इस इलाके में मचे घमासान ने दुनिया को हिलाकर रख दिया है, मेरी स्मृतियों में एक बार फिर से यरूशलम की इस ओल्ड सिटी की रील खुल गई है। इस रील की खासियत यह भी है कि इसे खोलना तो आसान है मगर बंद करना बेहद मुश्किल। मैंने अब यह कोशिश भी छोड़ दी है।

कैश में ज्यादा बड़े ट्रांजेक्शन करने पर आ सकता है आयकर विभाग का नोटिस;

इन ६ बातों का रखें ध्यान, नहीं तो होना पड़ सकता है परेशान

नई दिल्ली : अगर आप बड़े कैश ट्रांजैक्शन करते हैं तो ये आपको परेशानी में डाल सकता है। बैंक में पैसे जमा करने, म्यूचुअल फंड में निवेश या क्रेडिट कार्ड का ज्यादा बिल भरने पर इनकम टैक्स डिपार्टमेंट आपको नोटिस भेज सकता है। इसीलिए अगर कोई व्यक्ति बड़े कैश ट्रांजैक्शन करता है तो इसकी जानकारी उन्हें इनकम टैक्स विभाग को देनी होती है। हम आपको ऐसे ६ कैश ट्रांजैक्शन्स के बारे में बता रहे हैं ताकि आपको परेशानी का सामना न करना पड़े।

१० लाख से ज्यादा की FD करने पर

अगर आप फिक्स्ड डिपॉजिट (FD) में एक साल में १० लाख रुपए से ज्यादा जमा करते हैं तो आपको आयकर विभाग का नोटिस मिल सकता है। भले ही वो एक बार में जमा किए हों या कई बार में या फिर कैश ट्रांजैक्शन हों या डिजिटल। इनकम टैक्स विभाग आपसे इन पैसों के स्रोत के बारे में पूछ सकता है और आपको नोटिस भेज सकता है। ऐसे में ऋऊ में अधिकतर पैसे चेक के जरिए जमा करें।

बैंक अकाउंट में न करें ज्यादा कैश जमा

अगर किसी बैंक या को-ऑपरेटिव बैंक में आप भारी मात्रा में कैश जमा करते हैं तो उसकी सूचना बैंक या को-ऑपरेटिव बैंक आयकर विभाग को देगा। अगर कोई व्यक्ति एक वित्त वर्ष में अपने एक खाते या एक से अधिक खातों में १० लाख रुपए या उससे अधिक की रकम कैश में जमा करता है तो आयकर विभाग नोटिस भेजकर पैसों के स्रोत की जानकारी मांग सकता है।

क्रेडिट कार्ड के बिल का नकद भुगतान करने पर भी हो सकती है परेशानी

अगर आपके क्रेडिट कार्ड का बिल १ लाख से ज्यादा का है और आप एक बार में इस बिल को नकद में भर देते हैं। तो भी आपको नोटिस आ सकता है। वहीं अगर आप एक वित्त वर्ष में १० लाख रुपए से अधिक के क्रेडिट कार्ड बिल का भुगतान कैश में करते हैं तो भी आपसे पैसों के स्रोत के बारे में पूछा जा सकता है। अगर आपने ऐसा कुछ किया है तो आपको अपने इनकम टैक्स रिटर्न में इसकी जानकारी देनी होगी।

प्रॉपर्टी खरीदने के लिए ज्यादा नकद पैसे देने पर

प्रॉपर्टी रजिस्ट्रार के पास अगर आप कैश में बड़ा ट्रांजैक्शन

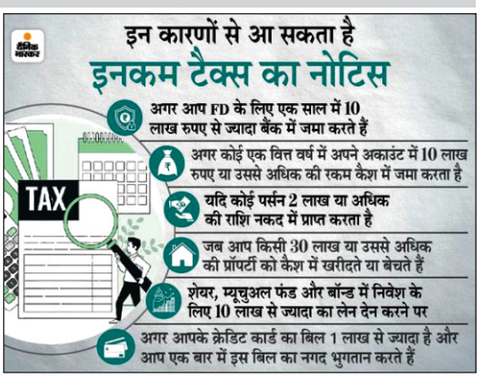

करते हैं तो उसकी रिपोर्ट आयकर विभाग के पास भी जाती है। अगर आप किसी ३० लाख या उससे अधिक की प्रॉपर्टी को कैश में खरीदते या बेचते हैं तो प्रॉपर्टी रजिस्ट्रार की तरफ से इसकी जानकारी आयकर विभाग को जाएगी। ऐसे में आयकर विभाग आपसे इस लेन-देन के बारे में जानकारी मांग सकता है।

शेयर और म्यूचुअल फंड में निवेश के लिए न दें ज्यादा नकदी

अगर आप शेयर, म्यूचुअल फंड, डिबेंचर और बॉन्ड में ज्यादा रकम का नकदी में लेन-देन करते हैं तो आपको दिक्कत हो सकती है। एक वित्त वर्ष में ऐसे इंस्ट्रुमेंट्स में अधिकतम १० लाख रुपए तक का ही कैश ट्रांजैक्शन किया जा सकता है। इससे ज्यादा का नकद ट्रांजैक्शन करने पर आप मुश्किल में फंस सकते हैं।

२ लाख रुपए से ज्यादा का नकद गिफ्ट न लें

सेक्शन २६९डढ के अनुसार यदि कोई पर्सन २ लाख या अधिक की राशि नकद में प्राप्त करता है, तो उस पर्सन पर पेनाल्टी लगाई जाएगी। यानी कि इस सेक्शन में पेनाल्टी कैश प्राप्त करने वाले पर लगाई जाएगी न कि राशि का भुगतान करने वाले पर। इसलिए अगर आप २ लाख या अधिक की राशि गिफ्ट के रूप में ले रहे हैं, तो इसे सिर्फ बैंकिंग चैनल्स के माध्यम से लें, जैसे : /C Payee चेक, या - /C Payee बैंक ड्राफ्ट, या इलेक्ट्रॉनिक क्लीयरेंस सिस्टम के माध्यम से बैंक में ट्रांसफर। यदि पेमेंट सेल्फ चेक के माध्यम से प्राप्त किया जा रहा है, तो इसे भी कैश में किया गया लेन-देन ही माना जाएगा और

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों के साथ संवाद करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

नई दिल्ली : देश में कोरोना की दूसरी लहर के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (Narendra Modi) ने आज वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (Council of Scientific and Industrial Research, CSIR) सोसायटी के वैज्ञानिकों के साथ बैठक की. बैठक की शुरुआत करते हुए पीएम मोदी ने कहा, कोरोना वैश्विक महामारी, पूरी दुनिया के सामने इस सदी की सबसे बड़ी चुनौती बनकर आई है. लेकिन इतिहास इस बात का गवाह है, जब-जब मानवता पर कोई बड़ा संकट आया है, साइन्स ने और बेहतर भविष्य के रास्ते तैयार कर दिए हैं.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, बीती शताब्दी का अनुभव है कि जब पहले कोई खोज दुनिया के दूसरे देशों में होती थी तो भारत को उसके लिए कई-कई साल का इंतज़ार करना पड़ता था. लेकिन आज हमारे देश के वैज्ञानिक दूसरे देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे हैं, उतनी ही तेज गति से काम कर रहे हैं. पीएम मोदी ने कहा, किसी भी देश में साइन्स और टेक्नालॉजी उतनी ही ऊंचाइयों को छूती है, जितना बेहतर उसका इंडस्ट्री से, मार्केट से संबंध होता है.

हमारे देश में CSIR साइन्स, सोसाइटी और इंडस्ट्री की इसी व्यवस्था को बनाए रखने के लिए एक संस्थागत व्यवस्था का काम करता है. हमारी इस संस्था ने देश को कितनी ही प्रतिभाएं दी हैं, कितने ही वैज्ञानिक दिए हैं. शांतिस्वरूप भटनागर जैसे महान वैज्ञानिक ने इस संस्था को नेतृत्व दिया है. आज भारत, एग्रिकल्चर से एस्ट्रॉनॉमी तक, आपदा प्रबंधन से रक्षा प्रौद्योगिकी तक वैक्सीन से वर्चुअल रियलिटी तक और बायोटेक्नालजी से लेकर बैटरी टेक्नोलॉजी तक, हर दिशा में आत्मनिर्भर और सशक्त बनना चाहता है।

देश में तीसरी लहर की आहट, दो राज्यों में ९० हजार बच्चे कोरोना संक्रमित प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, आज भारत सतत विकास और क्लीन एनर्जी के क्षेत्र में दुनिया को रास्ता दिखा रहा है. आज हम सॉफ्टवेयर से लेकर सैटेलाइट तक, दूसरे देशों के विकास को भी गति दे रहे हैं। दुनिया के विकास में प्रमुख इंजन की भूमिका निभा रहे हैं. कोरोना के इस संकट ने रफ्तार भले कुछ धीमी की है लेकिन आज भी हमारा संकल्प है। आत्मनिर्भर भारत, सशक्त भारत.

मुंबई में सड़क के लुटेरे हुए गिरफ्तार,सरेराह वर्दी का रौब दिखाकर होती

मुंबई क्राइम ब्रांच के हत्थे एक ऐसा गिरोह चढ़ा है जिसका सरगना खुद एक पुलिसकर्मी है। यह गिरोह लोगों को लूटा करता था वो भी वर्दी का रौब दिखाकर। फिलहाल इस गिरोह के ४ सदस्य क्राइम ब्रांच की हिरासत में है।

हाथों में हथकड़ी और चेहरे पर नकाब पहने ये वो शातिर चोर हैं जो मुंबई की सड़कों पर दिनदहाड़े लोगो को लूटने का काम किया करते थे। लेकिन पिछले दिनों एक ज्वेलर को लूटना इनके लिए भारी पड़ गया। जिसकी वजह से अब ये सब हवालात की हवा खा रहे हैं। हैरानी वाली बात यह है कि इन लुटेरों की गैंग में एक पेशे से पुलिसकर्मी भी है।

जिस वारदात के बाद इन लुटेरों की गिरफ्तारी हुई है वो ३ दिन पहले हुई थी। जब पीड़ित ज्वेलर अपने साथी के साथ मोटरसाइकिल पर सवार होकर मुंबई के भायखला इलाके से गुजर रहा था। तभी इन लोगों ने उसे बीच सड़क पर रोक लिया। खुद को पुलिसकर्मी बताकर उसके गाड़ी के पेपर चेक करने के बहाने उसके पास मौजूद २ किलो ५०० ग्राम सोना लेकर चंपत हो गए। इस सोने की तकरीबन कीमत सवा करोड़ रुपये है।

लूट की वारदात की जानकारी जब पीड़ित ज्वेलर ने पुलिस को दी। तब मामले की जांच क्राइम ब्रांच की यूनिट ३ ने शुरू की। वारदात की जगह पर लगे सीसीटीवी और मोटरसाइकिल के रजिस्ट्रेशन नंबर की मदत से अधिकारियों ने इन लुटेरों को अरेस्ट कर हवालात भेज दिया है।जांच में पता चला कि मुंबई पुलिस का एक कर्मचारी जो सर्विंग था। वो खुद ऐसे ज्वेलर्स के साथ लूट की वारदात को कैसे अंजाम देना है उनकी स्क्रिप्ट लिखता था। फिलहाल पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि इस गैंग ने कितनी और लूट की वारदातों को अंजाम दिया है।

कैसे रखे जाते हैं तूफानों के नाम, जानें 'टाउते' का क्या मतलब, किस देश ने दिया नाम

नई दिल्ली : भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने शनिवार को कहा कि अरब सागर के ऊपर गहरा दबाव चक्रवाती तूफान 'टाउते' में बदल गया है और इसके १८ मई के आसपास पोरबंदर और नलिया के बीच गुजरात तट को पार करने की आशंका है. विभाग ने कहा कि टाउते १६-१८ मई तक एक बहुत ही भयंकर चक्रवाती तूफान का रूप ले लेगा.

आईएमडी ने दोपहर १:४५ बजे जारी बुलेटिन में कहा, टाउते के अगले छह घंटों के दौरान गंभीर चक्रवाती तूफान में और बाद के १२ घंटों के दौरान बहुत ही गंभीर चक्रवाती तूफान में और तेज होने की संभावना है. इसके उत्तर-उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ने और १८ मई की दोपहर/शाम के आसपास पोरबंदर और नलिया के बीच गुजरात तट को पार करने की बहुत संभावना है. म्यामांर ने इस चक्रवाती तूफान का नाम टाउते दिया है. जिसका अर्थ है गेको, जिसका बर्मीज़ में मतलब तेज आवाज निकालने वाली छिपकली होता है. यह भारतीय तट पर इस साल का यह पहला चक्रवाती तूफान होने जा रहा है. विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्लूएमओ) के तत्वावधान में ट्रॉपिकल चक्रवातों को आधिकारिक तौर पर दुनिया भर में फैले इसके एक चेतावनी केंद्र द्वारा नाम दिया जाता है.

चूंकि ट्रॉपिकल चक्रवात एक सप्ताह या उससे अधिक समय तक रह सकते हैं, ऐसे में एक समय में एक से अधिक चक्रवात हो सकते हैं. इस प्रकार तूफानों को नाम दिए गए हैं ताकि पूर्वानुमान करते समय भ्रम की स्थिति से बचा जा सके. सामान्य तौर पर, उष्णकटिबंधीय चक्रवातों का क्षेत्रीय स्तर पर नियमों के अनुसार ही नाम दिया जाता है. हिंद महासागर और दक्षिण प्रशांत क्षेत्र में, उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के नाम एल्फाबेटिकली और महिलाओं और पुरुषों के नाम पर होते हैं.

इस तरह तय किया जाता है नाम

उत्तरी हिंद महासागर में राष्ट्रों ने २००० में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के नामकरण के लिए एक नई प्रणाली का उपयोग करना शुरू किया; ये नाम एल्फाबेट और तटस्थ लिंग के हिसाब से देश के अनुसार सूचीबद्ध हैं. सामान्य नियम यह है कि नाम सूची एक विशिष्ट क्षेत्र के थचज सदस्यों के राष्ट्रीय मौसम विज्ञान और जल विज्ञान सेवाओं (NMHS) द्वारा प्रस्तावित की जाती है, और संबंधित उष्णकटिबंधीय चक्रवात क्षेत्रीय निकायों द्वारा उनके सालाना और दो साल में होने वाले सत्रों में अप्रूव की जाती है. WMO/संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग एशिया और प्रशांत (WMO/ESC-P) पैनल ऑन ट्रॉपिकल साइक्लोन (PTC) में १३ देशों के सदस्य हैं. इनमें भारत, बांग्लादेश, म्यांमार, पाकिस्तान, मालदीव, ओमान, श्रीलंका, थाईलैंड, ईरान, कतर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और यमन जो चक्रवात का नाम तय करते हैं.

आठ सदस्यों वाले पैनल ने २००४ में ६४ नामों की एक लिस्ट फाइनल की थी. पिछले साल भारत में कहर बरपाने वाले चक्रवात के लिए अम्फान नाम उस सूची में अंतिम नाम था. WMO/ESC-P समिति ने २०१८ में पांच और देशों को शामिल करने के लिए सदस्यों की सूची का विस्तार किया. पिछले साल, एक नई सूची जारी की गई थी जिसमें चक्रवातों के १६९ नाम हैं, १३ देशों के १३ सुझावों का संकलन है.

इजरायल में दो गुट आमने-सामने

टेलीकॉम कंपनी हमास के साथ, तो इजरायलियों ने छोड़े कनेक्शन

इजरायल और फिलिस्तीन में पिछले १० दिन से चल रहे संघर्ष के बीच इजरायल में दो गुट आमने-सामने आ गए हैं। इनमें से पहला गुट है इजरायल के नागरिक, जो अपने देश के साथ खड़े हैं। वहीं दूसरा गुट वह है, जो फिलिस्तीन के पक्ष में है और हमास का भी समर्थन कर रहा है। इसमें ज्यादातर अरब देशों के नागरिक हैं, जो दुनिया के अलग-अलग देशों से आकर इजरायल की कंपनियों में नौकरी कर रहे हैं। दोनों देशों के बीच जारी मौजूदा जंग का इस कदर असर हुआ है कि ४० साल के इतिहास में पहली बार इजरायल के लूद और रामले जैसे शहरों में प्रदर्शन हो रहे हैं। खास बात यह है कि इन प्रदर्शनकारियों ने हमास के प्रति समर्थन जताया है। मामला तब और गर्मा गया, जब इजरायल ने दोनों ही शहरों में प्रदर्शन करने वालों के खिलाफ सेना उतार दी। हालांकि, हमास का समर्थन करने वाले प्रदर्शनकारियों में शामिल अपने कर्मचारियों को स्थानीय कंपनियों ने चेतावनी दी है।

दूसरी तरफ इजरायल में मोबाइल सेवा देने वाली कंपनी सेल्कॉम ने अरबियों द्वारा किए जा रहे प्रदर्शन को समर्थन देने का ऐलान कर दिया है। इससे इजरायली नागरिक बुरी तरह भड़क उठे हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि इस ऐलान के महज दो घंटे के भीतर २८ हजार से ज्यादा इजरायली नागरिकों ने सेल्कॉम के मोबाइल कनेक्शन कटवा डाले।

डूर, इजरायल में जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। रोजमर्रा की इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं की बिक्री करने वाली दुकानों को एक निश्चित समय के लिए ही खोलने की अनुमति है। इसमें भी ८० फीसदी बाजार ही खुल रहे हैं। हालांकि इस दौरान बीच-बीच में बमबारी होने पर अलर्ट सायरन बज उठता है और व्यापारी तत्काल दुकानें बंद कर सेफ्टी रूम में पहुंच जाते हैं। सेफ्टी रूम और शेल्टर होम में सरकार और सामाजिक संगठन लोगों को बाथरूम, टॉयलेट, किचन, फ्रिज, माइक्रोवेव और स्टोरेज सहित सभी जरूरी सुविधाएं मुहैया करवा रहे हैं।

पाकिस्तान सरकार ने इजरायली हमले झेल रहे फिलीस्तीन को मदद देने का फैसला किया है। मंगलवार को इमरान खान की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में तय किया गया कि पाकिस्तान फिलिस्तीनियों को मेडिकल किट्स भेजेगा। दूसरी ओर मंगलवार को ही पाक के विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी तुर्की पहुंचे। वे राष्ट्रपति एर्दोगन से मुलाकात कर इजरायल के खिलाफ रणनीति का खाका बनाएंगे।

ईरान के अगले राष्ट्रपति क्या कट्टरपंथी इब्राहिम राइसी बनने वाले हैं?

ईरान के रूढ़िवादियों के एक लिए अच्छी ख़बर है, वहां के न्यायतंत्र के प्रमुख इब्राहिम राइसी को जून में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव लड़ने की इजाज़त दे दी गई है. राजनीति में वो एक बड़ा क़द हैं और रूढ़िवादी ख़ेमे के सबसे प्रबल दावेदार. रूढ़िवादियों के बीच उन्हें चुनने को लेकर सहमति दिख रही है.

राइसी को ईरान के सुप्रीम लीडर आयातुल्लाह अली ख़ामेनेई का उत्ताराधिकारी माना जा रहा है. उन्होंने ही राइसी को २०१९ में न्यायतंत्र का प्रमुख बनाया था. सरकार मीडिया के अलावा ईरानी सेना के रिवल्यूशन गार्ड कॉर्प्स द्वारा चलाए जाने वाले मीडिया संस्थाओं का भी उन्हें समर्थन हासिल है.

ईरान में किए गए कई सर्वे बताते हैं कि राइसी रेस में आगे हैं, हालांकि ये सर्वे पूरी तरह से भरोसेमंद नहीं हैं.

उन्होंने पहले २०१७ में ध्रुवीकरण के बीच राष्ट्रपति चुनाव में क़िस्मत

आज़माई थी लेकिन मौजूदा राष्ट्रपति हसन रूहानी से हार गए थे. राइसी को एक करोड़ ६० लाख वोट मिले थे जबकि उनके प्रतिद्वंदी ने दो करोड़ ४० लाख वोट पाकर जीत दर्ज की थी.

बुरे आर्थिक दौर में ईरान

लेकिन इस साल हालात अलग हैं. जिन लोगों ने रूहानी को वोट दिया था वो उनके नरम रवैये से ख़ुश नहीं हैं. कई लोग उन्हें ईरान के बुरे आर्थिक हालात का ज़िम्मेदार मानते हैं. अमेरिका ने २०१५ में परमाणु समझौते से हाथ खींच लिया था, इसके बाद ईरान पर प्रतिबंध लगा दिए गए और वहां की आर्थिक हालात बदतर होती गई.

अब ईरान परमाणु डील को फिर से लागू करने के लिए ऑस्ट्रिया से बात कर रहा है. वो अगर इसमें सफल हो भी जाता है, तब भी इसका असर जून में होने वाले चुनावों पर नहीं पड़ेगा क्योंकि इसके नतीजे देर से नज़र आएंगे.

ईरान के उलझे हुए राजनीतिक समीकरण ने विश्लेषकों का पिछले २५ सालों में कई बार ध्यान खींचा है. अभी ये पता नहीं है कि रूढ़िवादियों के वर्चस्व वाली गार्डियन काउंसिल, जो चुनाव कराती है, वो कितने उम्मीदवारों को चुनाव में उतरने की इजाज़त देगी.

लेकिन राइसी के जीतने की उम्मीद ज़्यादा लग रही है, ख़ासतौर पर रूहानी सरकार से जुड़े लोगों की तुलना में.

लेकिन उनके लिए राष्ट्रपति पद तक पहुँचना आसान नहीं होगा. आने वाली बहसों और कैंपेन में उन्हें दूसरे उम्मीदवारों से कड़ी टक्कर मिलेगी.

सुधारवादी लोगों के ख़िलाफ़ आक्रोश

सुधारवादियों ने २०१३ और २०१७ में राष्ट्रपति रूहानी का समर्थन किया था. लेकिन वो आर्थिक और सामाजिक मसलों पर बहुत बदलाव नहीं ला सके. इसलिए इस बार हवा सुधारवादियों के ख़िलाफ़ दिख रही है.

सुधारवादी और नरमपंथी गुट परमाणु समझौते के सबसे बड़े समर्थक थे. ये डील रूहानी सरकारी की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है. लेकिन अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के समझौते से बाहर आने और प्रतिबंध लगाने के फ़ैसलों के कारण हालात बिगड़ गए.

साल २०२० के चुनावों में वोट देने वाले लोगों का प्रतिशत १९७९ में आई क्रांति के बाद सबसे कम था. ये इस ओर इशारा करता है कि सुधारवादियों का वोटरों पर प्रभाव कम हो गया है.

इरान रिफ़ॉर्म फ्रंट सुधारवादी पार्टियों का एक राजनीतिक समूह है. उम्मीद की जा रही है कि वो पहले उप–राष्ट्रपति रहे इसहाक़ जहांगीर को चुनाव में उतार सकता है.

एक ज़माने में जहांगीर रूहानी के समर्थकों के बीच जाना माना चेहरा थे. लेकिन अब उनपर ग़लत आर्थिक फ़ैसले लेने के आरोप लग रहे हैं. इसलिए वो दूसरे उम्मीदवारों के निशाने पर रहेंगे.

एकसाथ आएंगे रूढ़िवादी?

दो गुट बिखर चुके रूढ़िवादियो को एकसाथ लाने की कोशिश कर रहे हैं– कोएलिशन काउंसिल और द फ़ोर्सेस ऑफ़ द इस्लामिक रिवल्यूशन (सीसीएफआईआर) और प्रिंसप–लिस्ट यूनिटी काउंसिल (पीयूसी).

सीसीएफ़आईआर दिसंबर २०१९ से काम कर रहा है और इसे मजलिस के पूर्व स्पीकर और वरिष्ठ राजनेता गुलामली हदद अदेल चलाते है. पीयूसी का गठन नवंबर २०२० में किया गया था और इसे एक रूढ़िवादी संस्था कॉम्बैटन क्लर्गी एसोसिएशन चलाता है. पीयूसी की अध्यक्षता अयातुल्लाह मोहम्मद मोवाहेदी करमानी करते हैं, तो एक रूढ़िवादी धार्मिक नेता हैं.

ईरान के ख़िलाफ़ इसराइल के ख़ुफ़िया ऑपरेशन कितने कामयाब हो पाए

चीन–ईरान की 'लायन–ड्रैगन डील' से क्यों नाख़ुश हैं ईरान के लोग?

इसके प्रवक्ता मनुशेहर मोट्तकी पूर्व राष्ट्रपति मोहम्मद अहमदीनेजाद की सरकार में विदेश मंत्री रह चुके हैं.

सीसीएफआईआर ने राइसी के नामांकन का स्वागत किया है और दूसरे रूढ़िवादी संगठनों से भी समर्थन की अपील की है. मई के शुरुआत में मोट्तकी ने कहा था कि राइसी पर गुट की फ़ाइनल सहमति बन गई है. उम्मीद की जा रही है कि कई रूढ़िवादी अपने नामांकन वापस ले लेंगे ताकि राइसी के लिए राह आसान हो. इसके अलावा गार्डियन काउंसिल भी अहमदीनेजाद समेत कुछ प्रतिद्वंदियों को हटा सकता है.

लेकिव राइसी को फिर भी उन उम्मीदवारों से कड़ी टक्कर मिलेगी जिन्हें काउंसिल इजाज़त देगा. इसमें पूर्व स्पीकर अली लारीज़ानी भी शामिल है. वो एक मध्यम रूढ़िवादी हैं जिन्हें कई राजनीतिक दलों का क़रीबी माना जाता है. वो सुप्रीम लीडर के वरिष्ठ सलाहकार भी हैं और उनके शानदार भाषण देने की कला उनके लिए फ़ायदेमंद साबित हो सकती है.

वोटिंग प्रतिशत का असर

कई जानकारों का मानना है कि मौजूदा समय में वोटरों की रुचि चुनावों में कम है.

सरकारी चैनल के एक पोल में कहा गया है कि वोटरों का प्रतिशत महामारी के इस दौर में कम रह सकता है.

पिछले तीन दशकों में कम वोटिंग ज़्यादातर रूढ़िवादियों के लिए फ़ायदेमंद रही है. सुधावरवादियों ने अपना वोट बैंक खो दिया है और सत्ता के पक्ष में वोट देने वाले मतदाता रूढ़िवादियों के साथ है.

इसलिए इस बार उम्मीद जताई जा रही है कि राइसी ईरान के आठवें राष्ट्रपति बन सकते हैं, एक ऐसे चुनाव में जिसे जानकार ढीला–ढाला चुनाव बता रहे हैं.

(बीबीसी मॉनिटरिंग दुनिया भर के टीवी, रेडियो, वेब और प्रिंट

माध्यमों में प्रकाशित होने वाली ख़बरों पर रिपोर्टिंग और विश्लेषण करता है. आप बीबीसी मॉनिटरिंग की खबरें ट्विटर और फ़ेसबुक पर भी पढ़ सकते हैं)

(बीबीसी हिन्दी के एंड्रॉएड ऐप के लिए आप यहां क्लिक कर सकते हैं. आप हमें फ़ेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूबपर फ़ॉलो भी कर सकते हैं.)

अब ईरान परमाणु डील को फिर से लागू करने के लिए ऑस्ट्रिया से बात कर रहा है. वो अगर इसमें सफल हो भी जाता है, तब भी इसका असर जून में होने वाले चुनावों पर नहीं पड़ेगा क्योंकि इसके नतीजे देर से नज़र आएंगे.

ईरान के उलझे हुए राजनीतिक समीकरण ने विश्लेषकों का पिछले २५ सालों में कई बार ध्यान खींचा है. अभी ये पता नहीं है कि रूढ़िवादियों के वर्चस्व वाली गार्डियन काउंसिल, जो चुनाव कराती है, वो कितने उम्मीदवारों को चुनाव में उतरने की इजाज़त देगी.

लेकिन राइसी के जीतने की उम्मीद ज़्यादा लग रही है, ख़ासतौर पर रूहानी सरकार से जुड़े लोगों की तुलना में.

लेकिन उनके लिए राष्ट्रपति पद तक पहुँचना आसान नहीं होगा. आने वाली बहसों और कैंपेन में उन्हें दूसरे उम्मीदवारों से कड़ी टक्कर मिलेगी.

सुधारवादी लोगों के ख़िलाफ़ आक्रोश

सुधारवादियों ने २०१३ और २०१७ में राष्ट्रपति रूहानी का समर्थन किया था. लेकिन वो आर्थिक और सामाजिक मसलों पर बहुत बदलाव नहीं ला सके. इसलिए इस बार हवा सुधारवादियों के ख़िलाफ़ दिख रही है.

सुधारवादी और नरमपंथी गुट परमाणु समझौते के सबसे बड़े समर्थक थे. ये डील रूहानी सरकारी की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है. लेकिन अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के समझौते से बाहर आने और प्रतिबंध लगाने के फ़ैसलों के कारण हालात बिगड़ गए.

साल २०२० के चुनावों में वोट देने वाले लोगों का प्रतिशत १९७९ में आई क्रांति के बाद सबसे कम था. ये इस ओर इशारा करता है कि सुधारवादियों का वोटरों पर प्रभाव कम हो गया है.

इरान रिफ़ॉर्म फ्रंट सुधारवादी पार्टियों का एक राजनीतिक समूह है. उम्मीद की जा रही है कि वो पहले उप–राष्ट्रपति रहे इसहाक़ जहांगीर को चुनाव में उतार सकता है.

एक ज़माने में जहांगीर रूहानी के समर्थकों के बीच जाना माना चेहरा थे. लेकिन अब उनपर ग़लत आर्थिक फ़ैसले लेने के आरोप लग रहे हैं. इसलिए वो दूसरे उम्मीदवारों के निशाने पर रहेंगे.

एकसाथ आएंगे रूढ़िवादी?

दो गुट बिखर चुके रूढ़िवादियो को एकसाथ लाने की कोशिश कर रहे हैं– कोएलिशन काउंसिल और द फ़ोर्सेस ऑफ़ द इस्लामिक रिवल्यूशन (सीसीएफआईआर) और प्रिंसप–लिस्ट यूनिटी काउंसिल (पीयूसी).

सीसीएफ़आईआर दिसंबर २०१९ से काम कर रहा है और इसे मजलिस के पूर्व स्पीकर और वरिष्ठ राजनेता गुलामली हदद अदेल चलाते है.

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महाराष्ट्र क्राईम्स
मुंबई, ०५ जून २०२१

मुंबई पुलिस ने कांस्टेबल विनायक शिंदे को सेवा से किया बर्खास्त, सचिन वाजे का साथ देने का है आरोप

विनायक शिंदे को संविधान की धारा ३११(२)(बी) के तहत बर्खास्त किया गया है। शिंदे पर आरोप है कि उसनेएंटीलिया मामले में पुलिस अधिकारी सचिन वाजे का साथ दिया था।

उद्योगपति मुकेश अंबानी के घर एंटीलिया के बाहर विस्फोटक से लदी कार खड़ी करने और कारोबारी मनसुख हिरेन की हत्या के मामले में मुंबई पुलिस ने गिरफ्तार कांस्टेबल विनायक शिंदे को भी पुलिस की नौकरी से बर्खास्त कर दियाहै। बता दें कि इस मामले में पुलिस अधिकारी सचिन वाजे को भी सेवा से बर्खास्त किया गया था।विनायक शिंदे को अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (पश्चिमी क्षेत्र) संदीप कार्णिक ने संविधान की धारा ३११(२)(बी) के तहत बर्खास्त कियाहै।

एक अधिकारी ने बताया कि मनसुख हिरेन हत्याकांड मामले में आरोपी मुंबई पुलिस के कांस्टेबल विनायक शिंदे को सोमवार को सेवा से बर्खास्त कर दिया गया। उन्होंने कहा कि इससे पहले मुंबई पुलिस के निरीक्षक सचिन वाजे और उसके सहयोगी सहायक पुलिस उप निरीक्षक रियाज हिसामुद्दीन काजी को सेवा से बर्खास्त कर दिया गया था।

बता दें कि वाजे और काजी उद्योगपति मुकेश अंबानी के घर के पास गाड़ी से विस्फोटक सामग्री मिलने और व्यापारी मनसुख हिरन की हत्या के मामले में आरोपी हैं और एनआईए ने दोनों को गिरफ्तार किया था।

गौरतलब है कि बीती २५ फरवरी को अंबानी के घर के पास जिस गाड़ी से विस्फोटक मिला था, उसका मालिक कथित तौर पर मनसुख हिरेन था। बाद में पांच मार्च को हिरेन की लाश ठाणे जिले में बरामद हुई थी।

रियाज हिसामुद्दीन काजी शुक्रवार को हुए थे बर्खास्त

वहीं इससे पहले शुक्रवार को सहायक पुलिस निरीक्षक रियाज हिसामुद्दीन काजी को शुक्रवार को सेवा से बर्खास्त कर दिया गया था। एक अधिकारी ने इस बारे में बताया। उन्होंने बताया कि मुंबई के पुलिस आयुक्त ने संविधान के अनुच्छेद ३११ (दो) (बी) के तहत मुंबई अपराध शाखा में कार्यरत सचिन वाजे के पूर्व सहयोगी काजी को बर्खास्त कर दिया। इस अनुच्छेद के तहत किसी सरकारी अधिकारी को बिना विभागीय जांच के सेवा से हटाया जा सकता है।

क्या है एंटीलिया मामला

बता दें कि २५ फरवरी को उद्योगपति मुकेश अंबानी के आवास एंटीलिया से कुछ दूरी पर एक स्कॉर्पियो कार बरामद हुई थी। जिसके अंदर जिलेटिन की छड़े रखी हुई थी। इस मामले की प्रारंभिक जांच सचिन वाजे को सौंपी गई थी। बाद मेंवाजे को इस केस से हटा दिया गया था और मामले की जांच एनाआईए ने अपने हांथों में ले ली थी। सचिन वाजे के खिलाफ ठाणे के बिजनेसमैन मनसुख हिरेन की संदिग्ध मौत की भी जांच हो रही है। जो स्कॉर्पियो कार मुकेश अंबानी के घर के बाहर मिली थी वह मनसुख हिरेन की थी मनसुख हिरेन ५ मार्च को मृत पाए गए थे।

जानिए वाजे कैसे आया था एनआईए की गिरफ्त में

राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने सचिन वाजे को स्कॉर्पियो कांड में १३ मार्च को गिरफ्तार किया था। इसके बाद २७ दिन लंबी पूछताछ में एनआईए को जिलेटिन विस्फोटक की छड़ों से भरी स्कॉर्पियो को अंबानी के आवास एंटीलिया के पास लावारिस हालत में खड़ी करने के पीछे की पूरी कहानी पता चली। एनआईए की टीम ने फिलहाल यह बात सार्वजनिक नहीं की है, लेकिन जांच से जुड़े सूत्रों के मुताबिक, वाजे की योजना कुछ बदमाशों को उठाकर उनका एनकाउंटर करने की थी। इसके बाद वाजे स्कॉर्पियो खड़ा करने का आरोप इन बदमाशों के सिर डालकर वाहवाही लेना चाहता था। सूत्रों के मुताबिक, एनकाउंटर औरंगाबाद से चोरी की गई मारुति इको कार में किया जाना था। एनआईए को शक है कि इस एनकाउंटर में मनसुख हिरेन के अलावा दिल्ली के एक बदमाश को भी मारने की योजना थी। दरअसल एक समय मुंबई पुलिस के स्टार अधिकारियों में रहा वाजे लंबे समय तक निलंबित रहने के कारण लाइमलाइट से बाहर था। इस एनकाउंटर के जरिये वाजे दोबारा वही दर्जा हासिल करना चाहता था। लेकिन वाजे की योजना सफल होने से पहले ही केस को एनआईए ने अपने हाथ में ले लिया और सारा खेल खराब हो गया।

(पृष्ठ ५ का शेष)

इब्राहिम राइसी बनने वाले हैं?

पीयूसी का गठन नवंबर २०२० में किया गया था और इसे एक रूढ़िवादी संस्था कॉम्बैटन क्लर्गी एसोसिएशन चलाता है. पीयूसी की अध्यक्षता अयातुल्लाह मोहम्मद मोवाहेदी करमानी करते हैं, तो एक रूढ़िवादी धार्मिक नेता हैं. इसके प्रवक्ता मनुशेहर मोट्टकी पूर्व राष्ट्रपति मोहम्मद अहमदीनेजाद की सरकार में विदेश मंत्री रह चुके हैं.

सीसीएफआईआर ने राइसी के नामांकन का स्वागत किया है और दूसरे रूढ़िवादी संगठनों से भी समर्थन की अपील की है. मई के शुरुआत में मोट्टकी ने कहा था कि राइसी पर गुट की फ़ाइनल सहमति बन गई है. उम्मीद की जा रही है कि कई रूढ़िवादी अपने नामांकन वापस ले लेंगे ताकि राइसी के लिए राह आसान हो. इसके अलावा गार्डियन काउंसिल भी अहमदीनेजाद समेत कुछ प्रतिद्वंदियों को हटा सकता है. लेकिव राइसी को फिर भी उन उम्मीदवारों से कड़ी टक्कर मिलेगी जिन्हें काउंसिल इजाज़त देगा. इसमें पूर्व स्पीकर अली लारीज़ानी भी शामिल है. वो एक मध्यम रूढ़िवादी हैं जिन्हें कई राजनीतिक दलों का क़रीबी माना जाता है. वो सुप्रीम लीडर के वरिष्ठ सलाहकार भी हैं और उनके शानदार भाषण देने की कला उनके लिए फ़ायदेमंद साबित हो सकती है.

वोटिंग प्रतिशत का असर

कई जानकारों का मानना है कि मौजूदा समय में वोटरों की रुचि चुनावों में कम है.

सरकारी चैनल के एक पोल में कहा गया है कि वोटरों का प्रतिशत महामारी के इस दौर में कम रह सकता है. पिछले तीन दशकों में कम वोटिंग ज़्यादातर रूढ़िवादियों के लिए फ़ायदेमंद रही है. सुधारवादियों ने अपना वोट बैंक खो दिया है और सत्ता के पक्ष में वोट देने वाले मतदाता रूढ़िवादियों के साथ है.

इसलिए इस बार उम्मीद जताई जा रही है कि राइसी ईरान के आठवें राष्ट्रपति बन सकते हैं, एक ऐसे चुनाव में जिसे जानकार ढीला-ढाला चुनाव बता रहे हैं.

(बीबीसी मॉनिटरिंग दुनिया भर के टीवी, रेडियो, वेब और प्रिंट माध्यमों में प्रकाशित होने वाली ख़बरों पर रिपोर्टिंग और विश्लेषण करता है. आप बीबीसी मॉनिटरिंग की ख़बरें ट्विटर और फ़ेसबुक पर भी पढ़ सकते हैं)

(बीबीसी हिन्दी के एंड्रॉएड ऐप के लिए आप यहां क्लिक कर सकते हैं. आप हमें फ़ेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूबपर फ़ॉलो भी कर सकते हैं.)

पाकिस्तान भेजे दो हजार फोटो और मैसेज, ८ नंबरों पर देतीं थीं सारी सूचनाएं, ऐसे रिकवर हो रहा डाटा

हिना और यास्मीन करीब डेढ़ वर्ष से पाकिस्तानियों के संपर्क में थीं। यास्मीन ने यह बात कबूल की है और उसने आईएसआई एजेंट दिलावर के संपर्क में होने की बात भी मानी। उसने बताया कि वह दिलावर से शादी करना चाहती थी।

पाकिस्तान को देश से संबंधित सूचनाएं भेजने के आरोप में इंदौर निवासी दो सगी बहनों हिना और यास्मीन से पूछताछ की जा रही है। दोनों बहनों को उनके ही घर में नजरबंद रखा गया है। सूत्रों का दावा है कि ये दोनों युवतियां करीब डेढ़ साल से पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के एजेंट दिलावर के संपर्क में थीं और पाकिस्तान के ८ नंबरों पर अब तक दो हजार से ज्यादा फोटो व मैसेज भेज चुकी हैं।

सेना से रिटायर्ड नायक की बेटियां हैं दोनों

जानकारी के मुताबिक, हिना और यास्मीन गवली पलासिया में रहने वाले सेना से रिटायर्ड नायक की बेटियां हैं। कुछ अफसर उनके घर पूछताछ करने गए तो दोनों बहनों ने हंगामा किया। बता दें कि आईबी की सूचना के बाद इंदौर क्राइम ब्रांच ने कुछ दिन पहले यास्मीन और हिना को उनके घर में नजरबंद किया था। उस वक्त उनकी बड़ी बहन कौसर, बहनोई और बहन का बेटा भी घर में थे। ऐसे में पुलिस की एक टीम युवतियों के जीजा और उसके बेटे को पूछताछ के लिए इंदौर ऑफिस ले गई।

....तो शिवसेना नेता के इशारे पर वैक्सीनेशन के लिए बने थे फर्जी आई कार्ड?

ठाणे : ठाणे मनपा संचालित पार्किंग प्लाजा कोविड सेंटर में फर्जी पहचान पत्र के आधार पर टीकाकरण का गोरखधंधा चलने की बात सामने आई है। जिसके बाद राजीनीतिक माहौल गरमा गया है। भाजपा और मनसे दोनों मनपा प्रशासन तथा सत्तासीन शिवसेना पर हमलावर हुए हैं। दोनों का आरोप है कि गड़बड़ी करने वाले ठेकेदार को बचाने में लोग लगे हैं। ठेकेदार ओमसाई आरोग्य केयर प्राइवेट लिमिटेड के खिलाफ कार्रवाई और पुलिस में मामला दर्ज करने की मांग ने जोर पकड़ा है।

मनसे के ठाणे–पालघर जिला अध्यक्ष अविनाश जाधव ने फर्जी पहचान पत्र के पीछे शिवसेना के मुंबई के एक बड़े नेता का हाथ होने का आरोप लगाया है। जाधव का दावा है कि अस्पताल के ठेकेदार के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं होगी और मामले में लीपापोती कर दी जाएगी।

भाजपा विधायक ठाणे शहर अध्यक्ष निरंजन डावखरे ने बताया है कि जांच समिति ने ठेकेदार को बुलाया था, लेकिन वह हाजिर नहीं हुआ और ऐसा कर उसने मनपा प्रशासन और जांच समिति का अपमान किया है। डावखरे ने मनपा आयुक्त डॉक्टर बिपिन शर्मा को पत्र देकर ठेकेदार कंपनी के खिलाफ जल्द से जल्द कार्रवाई की मांग की है। डावखरे के अनुसार ग्लोबल अस्पताल में लाखों रुपये लेकर मरीजों को आईसीयू बेड उपलब्ध कराने, शवों की अदलाबदली, वेंटिलेटर में घपला, नर्सों को कई माह का

वेतन न देने, मरीजों के परिजन को उचित जानकारी न देने, मरीजों को ठीक दर्जे का भोजन न देने इत्यादि आरोप ठेकेदार पर लगे हैं।

जाधव ने भी आरोप लगाया है कि जो २१ फर्जी पहचान पत्र बरामद हुए हैं, उसमें मुंबई के हीरा व्यापारी सहित दूसरे व्यापारी और उनके परिवार के सदस्यों का नाम है। इसलिए ठेकेदार के खिलाफ पुलिस में मामला दर्ज होना चाहिए। फर्जी पहचान पत्र मामले की जांच के लिए एक समिति का गठन किया गया था। समिति ने रिपोर्ट आयुक्त को दी है। आयुक्त ने उसे कानूनी सलाह के लिए भेजा है।

'एक लाख लेकर मरीज को दिया गया था बेड'

ठाणे मनपा के अस्पताल में एक लाख रुपये लेकर मरीज को बेड देने का एक और मामला सामने आया है। मुंबई के दादर निवासी मरीज के परिजन ने मामले की शिकायत ठाणे की कापुरबावडी पुलिस से की है। मनपा संचालित ग्लोबल कोविड सेंटर में डेढ़ – डेढ़ लाख रुपये लेकर दो मरीज को भर्ती करने का मामला इससे पहले उजगार हुआ था। दादर के नायगांव में रहने वाली श्रद्धा सावंत ने पुलिस को बताया है कि मुंबई मनपा से सेवानिवृत उसके पिता अजित सावंत के कोरोना पॉजिटिव होने के चलते १८ अप्रैल को मुंबई के एक अस्पताल में ले उन्हें जाया गया था, लेकिन वहां बेड नहीं मिला था।

अस्पताल के एक डॉक्टर ने उन्हें ग्लोबल अस्पताल में कार्यरत डॉक्टर गफार का नंबर दिया था। बातचीत के बाद उनसे एक लाख की मांग की गई और गूगल पे के जरिये एक नंबर पर रुपये भेजने के बाद देर रात उसके पिता को भर्ती किया गया था। श्रद्धा सावंत ने अस्पताल के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग पुलिस से की है।

मेहुल चौकसी का ऑफर:भारतीय अधिकारी डोमिनिका आएं और जो भी सवाल करने हों करें, मैंने केवल इलाज के लिए देश छोड़ा है

पंजाब नेशनल बैंक (झछ) घोटाले के आरोपी मेहुल चौकसी ने भारत के सामने पेशकश रखी है। उसने कहा है कि भारतीय अधिकारी डोमिनिका आएं और अपनी जांच से जुड़े कोई भी सवाल पूछें। चौकसी ने दावा किया है कि उसने भारत सिर्फ इलाज के लिए छोड़ा था। वह कानून का पालन करने वाला नागरिक है। चौकसी ने ये बातें डोमिनिका हाईकोर्ट में भेजे अपने हलफनामे में कही हैं।

टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, चौकसी ने हलफनामे में कहा कि भारतीय अधिकारी मेरे खिलाफ किसी भी जांच के सिलसिले में सवाल कर सकते हैं। मैं उन्हें यहां आने और सवाल पूछने का ऑफर देता हूं। मैंने भारत में किसी एजेंसी से बचने की कोशिश नहीं की है। जब मैं अमेरिका में इलाज कराने के लिए भारत छोड़ रहा था, तब मेरे खिलाफ किसी भी एजेंसी द्वारा कोई भी वारंट नहीं जारी किया गया था।

चौकसी ने हलफनामे में दीं ये दलीलें

१. डोमिनिका में कोर्ट की कार्यवाही से बचने का भी मेरा कोई इरादा नहीं है। रेड कॉर्नर नोटिस जारी होने की वजह से मेरे भागने की कोई आशंका नहीं है। रेड कॉर्नर नोटिस कोई इंटरनेशनल वारंट नहीं होता है, वह बस एक अपील होती है, जो सरेंडर के लिए होता है।

२. इंटरपोल भारत की तरफ से अपील कर रही है कि मुझे ढूंढा जाए और भारत में मुझे प्रत्यर्पित करने की प्रक्रिया शुरू की जाए। ये प्रक्रिया शुरू हो गई है। मैं डोमिनिका छोड़ने का इरादा नहीं रखता हूं।

३. हां, मैं कोर्ट की इजाजत से एंटीगुआ जाना चाहता हूं। एंटीगुआ और बारबूडा में मेरे खिलाफ दो केस पेंडिंग हैं। ये केस मैंने ही फाइल किए हैं। ये इस बात को लेकर हैं कि मुझे भारत प्रत्यर्पित किया जाना चाहिए या नहीं। मैं एंटीगुआ कोर्ट की हर पेशी में मौजूद रहा हूं। मैं कानून का पालन करने वाला नागरिक हूं। मेरे ऊपर पहले कोई आरोप नहीं रहा है।

४. मुझे डर है कि अगर मैं पुलिस कस्टडी में रहा तो मेरी सेहत और ज्यादा गिर जाएगी। मैं ६२ साल का हूं और मुझे स्वास्थ्य से जुड़ी गंभीर समस्याएं हैं। मैं डायबिटिक हूं, दिमाग में क्लॉट है, दिल की समस्या और दूसरी परेशानियां भी हैं। मुझे बेल दी जाए।

५. अगर कोर्ट कहती है तो मैं बेल की अच्छीखासी कैश रकम दे सकता हूं। मैं अपने खिलाफ डोमिनिका में गलत तरीके से एंट्री का मामला खत्म होने तक यहीं रहूंगा, भागूंगा नहीं। मैं यहां रहने का खर्च भी उठाऊंगा। मैं अपनी सुरक्षा का खर्च भी उठा सकता हूं, मुझे डोमिनिका से किसी तरह की सुरक्षा नहीं चाहिए।

डोमिनिका पहुंचने से पहले एंटीगुआ में रह रहा था चौकसी

मेहुल चौकसी एंटीगुआ की नागरिकता लेकर २०१८ से वहीं रह रहा था, लेकिन २३ मई को अचानक वहां से लापता हो गया। इसके २ दिन बाद वह डोमिनिका में पकड़ा गया था। इस पूरे मामले के बीच एंटीगुआ के प्रधानमंत्री गैस्टन ब्राउन की एक चिट्ठी भी सामने आई है, जिसमें कहा गया है कि मेहुल ने नागरिकता से संबंधित जानकारी छिपाई थी। १४ अक्टूबर २०१९ को लिखे खत में ब्राउन ने कहा था, 'मैं एंटीगुआ और बारबूडा नागरिकता अधिनियम, कैप २२ की धारा ८ के मुताबिक एक आदेश देने का प्रस्ताव करता हूं ताकि आपको तथ्यों को जानबूझकर छिपाने के आधार पर एंटीगुआ और बारबूडा की नागरिकता से वंचित किया जा सके।'

हिरासत को हाईकोर्ट में किया चैलेंज

चौकसी पर गैरकानूनी तरीके से डोमिनिका में एंट्री करने का आरोप है, लेकिन उसने अपनी हिरासत को हाईकोर्ट में चैलेंज किया है। चौकसी का दावा है कि उसे एंटीगुआ–बारबूडा से अपहरण कर डोमिनिका लाया गया था। हालांकि सरकारी वकील ने चौकसी के दावे का विरोध करते हुए कहा कि वह गैरकानूनी तरीके से डोमिनिका में एंटर हुआ है और इसी के चलते उसे हिरासत में लिया गया था।

पदाधिकारी अवैध रुप से कर रहे है वसुली

(पृष्ठ १ का शेष)

जिस्म का प्रदर्शन करने वाली अर्धनग्न युवतीयोंको देखने के लिए कई बुढ़े–जवान यहाँपर आँखे सेकते रहते है। इज्जतदार अब्रुदार महिलाये यहाँ से गुजरने के लिए सौ बार सोचती होगी। स्थानिय खारघर पुलीस इसे नजरअंदाज करती है। हमारे संवाददाताने इसके बारे जानकारी प्राप्त की तो अजब और चौकन्ना करनेवाले तथ्य सामने आए।

क्रिस्टल प्लाझा सोसायटी इन दुकानोंके सामने धंदा करनेवाले दुकानदारोंसे हर माह सात हजार (७०००/–) रुपये दंड स्वरुप में वसुल करती है। दुकानदार इसके बदले में दुकानके सामने ठेला, या टपरी या अन्यरुपमें धंदा करनेवालोंसे १५०००/– (पंदह हजार रुपये) मासिक किराया लेते है। एक दुकान के सामने कमसे कम दोन धंदेवाले है। यदी यह दुकानदार किराये पर है तो वहाँ का किराया लगबग ७०,०००/– (सत्तर हजार रुपये) है। ७००००–३००००= ४००००/– रुपये मात्र उसे किराया देना होता है। जो लोग जादा किराया दे नही सकते है वह लोग दुकान के सामने की जगह किरायेपर लेकर बड़ा मुनाफा कमा रहे है। दिन के पुरे २४ घंटो में स्थानिय पुलीस की गाडी कमसे कम ४ बार यहाँपर आती है। चायपानी पिकर पुलीस कर्मचारी चले जाते है। इसपर पनवेल महानगर निगम के अतिक्रमण अधिकारी भी मेहरबान है। चौकाने वाली खबर तो यह है की, खारघर पुलीस थाने के वरिष्ट पुलीस निरिक्षक श्री. शत्रुघ्न माली इनका भी यहाँपर दुकान है। ऐसा सुत्रो का कहना है। 'लक्की तवा' नामसे यह दुकान चलायी जा रही है। खान नामक व्यक्ती इसे चला रहा है। श्री. शत्रुघ्न माली साहब ने यह दुकान किराये पर दि है या साझेदारी में इसका खुलासा अभी नही हो पा रहा है। यही कारण है की यह खान नामक व्यक्ती यहाँपर अपना दबदबा बनाकर धंदा कर रहा है। सुत्रोंके अुसार यह खान साहब रात को २०० बजे तर बिनधास्त धंदा करते है। श्री.

शत्रुघ्न माली का आशिर्वाद होने के वजह से स्थानिय पुलीस कोई कारवाई नही करती है। लॉकडाऊन जैसे कठीन दिनोंभी खान कानुनी नियमोंको अपने पैरोंतले कुचलकर धंदा कर रहा है। यह खबर प्रकाशित होने के पहले हमारी टीम यहाँपर चाय नास्ता करके आयी ताकी सत्य समझमें आए। 'महाराष्ट्र क्राईम्स' समाचार पत्र पुलीस प्रशासन, पनवेल महानगर निगम के अतिक्रमण विभाग और क्रिस्टल प्लाझा सोसायटी के पदाधिकारीयोंसे कुछ जनताकी अदालत में सवाल करती है की,

१) क्रिस्टल प्लाझा के परिसर में युवक युवतीयोंद्वारा हो रहे अश्लिल व्यवहार से प्रभावित हो कर यदी कोई छेडछाड की घटना हो तो जिम्मेदार कौन?

२) क्रिस्टल प्लाझा परिसर में खाने पिने के बाद जो कचरा होता है उससे मलेरिया, डेंगू जैसी बिमारी फैले तो उसके लिए जिम्मेदार कौन?

३) दुकानों के सामने हो रहे खान–पान के धंदो के लिए इस्तेमाल हो रहे गॅस सिलींडर की वजहसे यदी कोई बडी दुर्घटना होती है तो इसके लिऐ जिम्मेदार कौन?

४) खान–पान का धंदा करने वाले यह लोग खुले में खाना पकाते हैं। क्या यह सभी अन्न और औषधी प्रशासनके नियमोंका पालन कर रहै? यदी नही तो दोषी कौन?

५) क्या यहाँ कोरोना प्रतिबंधीत नियमोंका पालन किया जा रहा है? यदी नही तो जिम्मेदार कौन?

ऐसे कई सवाल है जिनके जवाब में स्थानिय पुलीस, पनवेल महानगर निगम के अधिकारी, स्थानिय पार्षद, और क्रिस्टल प्लाझा सोसायटी के पदाधिकारी की जिम्मेदारी है। और इन जिम्मेदार व्यक्तींयोंपर कानुनन कार्रवाई कौन करेगा यह सबसे बड़ा सवाल है।

ताबड़तोड़ मुठभेड़

पश्चिमी यूपी में दबोचे गए सात बदमाश, दो पुलिसकर्मी भी घायल,

सहारनपुर के थाना ननौता क्षेत्र में पुलिस और बदमाशों के बीच मुठभेड़ हो गई। गोली लगने पर घायल तीन बदमाशों सहित छह बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया गया। पश्चिमी यूपी के सहारनपुर और मुजफ्फरनगर जिले में शनिवार को पुलिस की बदमाशों के साथ मुठभेड़ हुई। दोनों मुठभेड़ों में सात बदमाशों को दबोचा गया है। वहीं मुठभेड़ में दो पुलिसकर्मी भी घायल हुए हैं।

सहारनपुर के थाना ननौता क्षेत्र में पुलिस और बदमाशों के बीच मुठभेड़ हो गई। गोली लगने पर घायल तीन बदमाशों सहित छह बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया गया। वहीं बदमाशों की तरफ से की गई फायरिंग में दो पुलिसकर्मियों को भी गोली लगी है। नानौता थाना पुलिस द्वारा शनिवार रात चौकी जंधेड़ी पर चेकिंग के दौरान पिकअप गाड़ी एवं मोटरसाइकिल सवार को रुकने का इशारा किया गया। जिसमें पिकअप एवं मोटरसाइकिल सवार बदमाशों द्वारा पुलिस पार्टी पर फायर कर भागने का प्रयास किया। सूचना पाकर क्राइम ब्रांच एवं थाना नानौता पुलिस द्वारा भोजपुर नहर पुल पर बदमाशों की घेराबंदी की गई। बदमाशों ने पुलिस पार्टी पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग की, जिसमें कांस्टेबल सोनू चौधरी और हेड कांस्टेबल संजीव घायल हो गए। जवाबी फायरिंग में जावेद उर्फ सादिक पुत्र उमरदीन निवासी अकबरपुर सुन्हेटी थाना कैराना शामली, राशिद पुत्र अलीशेर निवासी अकबरपुर सुन्हेटी थाना कैराना शामली और अलीशान पुत्र उमरदीन निवासी गोगवान थाना कैराना शामली गोली लगने से घायल हो गए। घायलों को इलाज के लिए जिला अस्पताल सहारनपुर में भर्ती कराया गया। फरार बदमाशों की तलाश में पुलिस द्वारा कॉम्बिंग की गई, जिसमें सुमित उर्फ बंदर पुत्र मामूराम निवासी अकबरपुर सुन्हेटी थाना कैराना शामली, जीशान उर्फ मामा पुत्र अशरफ निवासी हमजागढ़ थाना गंगोह, सहारनपुर एवं नौशाद पुत्र इस्लाम निवासी हमजाग, थाना गंगोह सहारनपुर को गिरफ्तार किया गया।

यह समाचार पत्र मासिक महाराष्ट्र क्राईम्स मालिक,मुद्रक प्रकाशक सिराज चौधरी द्वारा राजीक प्रिंटर्स,४९६,पंचशील नगर–१, नागसेन बु मंदिर रोड नं–३,तिलक नगर, चेम्बुर,मुंबई ४०००८९ से मुद्रित करका कर ८/ऐ/१६९/२७०२/टागोर नगर, किक्रोली (पू),मुंबई–४०००८३ से प्रकाशित किया। संपादक– सिराज चौधरी मो. ९७७३६२२९६७